मजलिस -4

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

तरतीब के लेहाज़ से क़ुरआने मजीद का पहला सूरा, मशहूर व मारूफ सूरा, वह सूरा जिसका सीखना, याद करना हर मुसलमान पर वाजिब व लाज़िम है। यूँ तो चाहिए ही कि हर मुसलमान कम अज़ कम इस किताब को तो पढ़ सके कि जो अल्लाह ने अपने रसूल की रिसालत की दलील बनाकर भेजी है। कम अज़ कम इतनातो हो जाये की वो क़ुरआन की तिलावत की तौफ़ीक हासिल कर लिया करे। कुछ बदकिस्मत मुसलमान ऐसे भी हैं जो दुनयावी उलूम में तो बड़े माहिर हैं, एम–ऐ हैं और क्या–क्या हैं क्या नहीं हैं। लेकिन क़ुरआन के लिये कहते हैं, साहब ! अब तो कम अज़ कम इतना तो आना चाहिये कि हिन्दी में क़ुरआन छप जाये, हम भी पढ़ लिया करें। इसलिये वो क़ुरआन पढ़ने से नावाक़िफ़ हैं। हिन्दी में छप भी जाये तो आप सही पढ़ेंगें क्यों कर?

अल्फाज़ को सही अदा करेंगें क्योंकर?
ज़ाल, ज़े ज़ो, ज़्वाद में फर्क करेंगें क्यों कर?

काश इतना ही हो जाये कि हम क़ुरआन ही पढ़ लिया करें बहर सूरत एक मुसलमान की हैसियत से फर्ज़ है हमारा और अगर आपकी औलाद है तो आप की जिम्मादारी है कि पहले आप उनको क़ुरआन की तालीम दें। पहले आप उनको इस काबिल करें कि वह क़ुरआन की तिलावत करने लगें फिर दुनिया के उलूम सिखाइये इस्लाम मना नहीं करता दुनिया के उलूम से। इस्लाम रोकता नहीं है कि आप साइंस न पढ़ाइये आप फलसफा न पढ़ाइये, आप अदबीयात न पढ़ाइये जो चाहे पढ़ाइये लेकिन पहले दीन तो पढ़ा दीजिये, इस्लामी तालीमात तो पहले सिखला दिजिये। बहरसूरत क़ुरआन का पढ़ना हर मुसलमान पर फर्ज़ और लाज़िम है। लेकिन अगर दूसरे सूरे वो नहीं भी पढ़ सकता निबह जायेगी एक हद तक। इसलिये कि अगर सूर–ए–यासीन नहीं पढ़ सकता या सूर–ए–रहमान नहीं पढ़ सकता, सूर–ए–आले इमरान नहीं पढ़ सकता लेकिन सूर–ए–अलहम्द के बगैर तो नमाज़ ही नहीं हो सकती। जैसा कि मैं अर्ज़ कर चुका हूँ कि ला सलात इल्ला बेफ़ा तेहतिल किताब बग़ैर सूर–ए–हम्द के नमाज़ ही नहीं। लेहाज़ा हर मुसलमान बच्चे के लिये फर्ज़ है कि पहले उसको सूरा–ए–हम्द को याद कराया जाये। और पहले होता भी ये था कि सूरा–ए–हम्द और इब्तेदाई सूरे छोटे–छोटे हैं वो छोटे–छोटे बच्चों को याद हुआ करते थे। इन्ना आतैना है, इन्ना आज़लना है, कुलयाअय्योहल काफ़रून है, कुल हो वलल्लाहो छोटे–छोटे सूरे सभी बच्चों को याद होते थे। ज़रूरत इसकी है कि सूर–ए–हम्द, क्योंकि वो जुज़्वे नमाज़ है। इसके बगैर नमाज़ हो ही नहीं सकती। लेहाज़ा सूर–ए–हम्द का याद होना वाजिब है।

इसी सूर–ए–हम्द की इब्तेदाई आयतें हैं जिनकी मैंने आपके सामने तिलावत की है जिसमें सबसे पहली आयत बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। है (सलवात)

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। नाम से उस अल्लाह के जो रहमान भी है और रहीम भी है यकीनन अज़मते इलाही का तकाज़ा है कि हम अपने कामों की इब्तेदा अल्लाह के नाम से किया करें। यकीनन इसमें इलाही बरकत है कि हम अगर अपने कामों की इब्तेदा अल्लाह के नाम से

करेंगे तो इनशाल्लाह बरकत शामिले हाल रहेगी। (सलवात) और हमारे काम दुनिया और आखरेत में दोनों लेहाज़ से इनशाल्लाह नतीजे तक पहुचेंगें।

अल्लाह के नाम से, मैं कल अर्ज़ कर चुका कि अल्लाह है इस्मे ज़ात। ये नाम है उसका कि जिस में तमाम सिफाते कमाल जमा हैं। और उसके बाद है असमाऐ सिफात यानी जो नाम हैं। वो किसी एक सिफत की तरफ इशारा करते हैं, अल्लाह ही का नाम है वल्लाहुल असमाअुल हुसना अल्लाह के लिये बड़े अच्छे–अच्छे नाम हैं। अल्लाह ही का नाम है रब भी, अल्लाह ही का नाम है करीम भी, अल्लाह ही का नाम है दाऊद भी, अल्लाह ही का नाम है हलीम भी, अल्लाह ही का नाम है जवाद भी उन्हीं असमाये सिफात में रहमान व रहीम भी है। रहमान व रहीम भी असमाऐ सिफातमें दाखिल हैं लेकिन कुदरत ने इन दो नामों पर यानी रहमान व रहीम पर इतना ज़ोर दिया है कि कम से कम दिन में तीस मरतबा अगर तुम नाफिला नहीं पढ़ने के आदी हो तो कम से कम दिन में तीस मरतबा ज़रूर मेरी रहमानीयत और मेरी रहीमियत का ऐकरार कर लिया करो।

हर नमाज़ में कम से कम दो सूरे पहली रकअत में और दो सूरे दूसरी रकअत में। पाँच नमाज़ें, पाँच चौको बीस, बीस मरतबा। तो जब तुमन सूरा शुरू कियातो बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम कह कर मेरी रहमानियत व रहीमियत का ऐकरार किया, और जब तुमने सूर–ए–अलहम्द पढ़ा, सूर–ए–अलहम्द पढ़ना वाजिब, तो फिर तुमने कहा अररहमान, मेरा पालने वाला रहमान भी है वो रहीम भी है, तो कम से कम दिन में तीस मरतबा मेरी रहमानियत व रहीमियत का ऐक़रार करते हो।

सबक़ते रहमती गज़बी मेरी रहमत मेरे गज़ब के आगे–आगे चलती है। तुमने दुनिया में रहम के बहुत से नमूने देखे होंगें लोगों के दिलों में। हर इंसान सख़्त दिल नहीं होता, जज़बात व रहम भी होते हैं। सब से ज़्यादा वो रहम करने वाले तुम्हारे माँ बाप हैं। माँ बाप से बढ़ कर कौन तुम्हारे ऊपर मेहेरबान होगा। कौन तुम्हारे ऊपर रहम करने वाला होगा। लेकिन क्या तुमने ज़रा गौर भी किया कि जो माँ बाप के दिल में जज़बऐ रहम पाया जाता है ये किसी का फैज़ तो नहीं कि जिसने उनके दिलों में ये रहम के जज़्बात पैदा कर दिये हैं। इसलिये अगर ये न हों तो तुम्हारी तरबियत नहीं हो सकती। अगर ये न हों तो तुम्हारे लिये ज़िन्दगी के कदम आगे बढ़ाना मुमकिन न था तो किसी अरहमुर्ररहेमीन ने ये जज़बाते रहम पैदा किये हैं ताकि तुम्हारी तरबियत हो सके, ताकि तुम्हारी ज़िन्दगी आगे कदम बढ़ा सके। वरना कौन है जो दूसरे के लिये तुम्हारी अपने रहतव आराम को तज देता है। येजो दूसरे के लिये खुद तकलीफ़ बरदाशत करना गवारा करता है। ये माँ की ऊलफ़त व मुहब्बत,रात रात भर अपने बच्चे के लिये अपनी नींद छोड़ देना। उसकी ज़रा सी तकलीफ़ पर तड़प जाना। अपना खून दूध की शक्ल में चुसा देना। ये क्या कोई मामूली जज़्बा है? लेकिन ये जज़्बा किसी ने बमसलहत पैदा किया है। फितरत की तरफ से ये अता किया गया है अगर ये न हो तो बच्चा पले क्यों कर? कमज़ोर वजूद न अपना रिज़्क हासिल कर सकता है, जो न अपनी हिफाज़त कर सकता है, ज़रूरत थी कि कोई ज़रीय–ए–रिज़्क बना दिया जाये। कोई इसका मुहाफिज़ बना दिया जाये। मेरे पास ये तो मानी हुई चीज़ है, उसकी दलील भी है, ज़रा तवज्जो फरमायें आप। ये जज़बाऐ मेहरबानी और रहम का इंसानों ही तक महदूद नहीं है जानवरों में भी पाया जाता है। चाहे इंसान न भी हो, हर मां अपने बच्चे से मुहब्बत व उलफ़त करती है। हर जानवर अपने बच्चे पर जान निसार करने के लिये तैय्यार रहता है। लेकिन कौन जानवर? ज़रा तवज्जो फरमायें कि बच्चे मोहताज जिनकी परवरिश के होते हैं उन्हीं के दिल में मुहब्बत होती है और जिनके बच्चे परवरिश के मोहताज नहीं हैं उनके दिल में कोई मुहब्बत नहीं होती ।

ये मछलियां जो आपके यहां आपने अपने हौज़ में पाल ली हैं, उनके भी तो नाजुक छोटे–छोटे बच्चे हैं जो अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहे है महदूद पानी में। क्या ये मछलियां जो उनकी मुहाफिज़ हैं, क्या ये मछलियां भी उनसे मोहब्बत करती हैं? माँ को पता ही नहीं कि मेरे बच्चे गये किधर? माँ बाप बच्चों में कोई रब्त हीं नहीं । क्यों? इसका बच्चा अंडे से निकलने के बाद खुद रिज़्क हासिल करता है मोहताज नहीं हैं। क्योंकि परवरिश की एहतेयाज नहीं लेहाज़ा जज़्बाऐ मुहब्बत नहीं तो मालूम हुआ कि ये मुहब्बत फ़ितरत में इस ऐहतेयाज की बिना पर पैदा की है जो बच्चे की परवरिश के लिये ज़रूरी है। और अच्छा आप के घर दूर न जाइये, आपके घर में पनाह लेने वाले छोटे–छोटे जानवर जिन्होंने अपने आशियाने अपने घर के कानों में बना लिये हैं। उनके बच्चे भी अंडे ही से निकले हैं जैसे मछली क बच्चे मगर इन की मुहब्बत देखिये। कमज़ोर जानवर हैं जानते हैं कि आपसे मुकाबला न कर सकेंगें, आप से टकरा न सकेंगें। लेकिन इधर आप उनके आशियाने के करीब गये जिसमें उनके बच्चे मौजूद, अब वो हर तरह आप से लड़ने को तैय्यार, हर तरह आपका मुकाबला करने को तैय्यार। परों से आपको मार रहे हैं और कुछ नहीं कर सकते तो फरयाद ही कर रहे हैं और कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम आपके जज़बऐ तरहीम को अपनी फरयाद से आमादा कर रहे हैं कि देखो जुल्म न करो, देखो इसमें मेरे छोटे–छोटे बच्चे हैं, देखो अभी ये इस काबिल नहीं है कि अपने को बचा सकें। मगर ये आपके मुकाबले पर आ गये। खुद भूखे हैं, चारों तरफ जा रहे हैं, जो समेट कर लाते हैं चुन के, वो उन बच्चों की तरफ़ मुंतकिल कर देते हैं। कब तक? जब तक उनमें परवाज़ नहीं पैदा हो जाये। जब तक वो खुद इस काबिल न हो गये कि अपना रिज़्क हासिल करें। लेकिन अब जब खुद इस काबिल हो गये तब वो ही माँ बाप जो जान देने के लिये तैय्यार थे तो हर तरफ़ से उनके लिये रोज़ी हासिल करके उनकी गेज़ा मोहय्या कर रहे थे, अब वही मां बाप अपने बच्चों को अपने से जुदा कर रहे हैं। वो तो आदत के मुताबिक उनके पास आ रहे हैं और अब ये पर उनको मार रहे हैं, अब ये उनको निकाल रहे हैं। और अब ये पर उनको मार रहे हैं, अब हम से तुम से कोई रब्त नहीं, अब तुम से कोई ताल्लुक नहीं। जाओ, निकलो अपनी ज़िन्दगी अलग बनाओ, अपना आशियाना अलग बनाओ। और कुछ दिनों के बाद एक दूसरे को पहचानते भी नहीं।

ये क्यों, ये मुहब्बत क्यों थी और ये मुहब्बत क्यों न रही। इसलिये कि रहीम व करीम ने दिल में मुहब्बत के जज़्बात डाल दिये थे कि इस जानदार कीजो अपना रिज़्क हासिल करने की कुदरत नहीं रखता जो अपने बचाने की सलाहियत नहीं रखता ज़िन्दगी क्यों कर गुज़ारेगी? अगर कोई मुहाफिज़ व निगरां न हो, अगर कोई उसका रिज़्क मोहय्या करनें वाला न हो। तो मालूम हुआ कि माँ बाप के दिल में किसी ने बमसलाहेत उलफतें डाली हैं तो तुम सोचो कि मां बाप इतने रहीम हैं तो वो कितना अरहमुर राहेमीन होगा कि जिस ने मां बाप को पैदा किया। (सलवात)

और अब मैं अर्ज़ करूँगा कि इससे पहले और आगे बढ़ूँ एक बात पर आप गौर कर लें कि इंसान के अलावा जितने जानदार हैं, सब के यहाँ जब बच्चा अपनी जगह पर खुद सलाहियत वाला हो गया तो अब माँ बाप को कोई रब्त ही नहीं, कोई ताल्लुक ही नहीं। अभी मैं मिसाल से अर्ज़ कर रहा था। तमाम जानवरों को देख लिजिये अब कोई भी ताल्लुक और रब्त नहीं। लेकिन इंसान के यहाँ ये नहीं। अब बच्चा जवान भी हो गया तो माँ की मुहब्बत ख़त्म थोड़ी हो गयी बल्कि जितना बढ़ता जाता है मोहब्बत बढ़ती जाती है। अगर इसी परवरिश की मसलहेत से था तो अब परवरिश की ज़रूरत नहीं रही, अब

उसकी हाजत नहीं रह गयी है कोई। अब क्यों ये मुहब्बत बाकी है, अब क्यों कहा जा रहा है कि औलाद के हक में माँ की दुआ मुसतेजाब होती है। क्यों कहा जा रहा है कि माँ दुआ कर दे तो रद नहीं हाती। क्यों कि उससे ज़्यादा तड़प कर कोई दुआ नहीं कर सकता। आखिर अब ये दिल में उलफत क्यों हैं, तड़प क्यों हैं? तो मैं अर्ज़ करूँगा कि खत्म हो जाती मोहब्बत अगर इंसानों की ज़िन्दगी भी इंफेरादी ज़िन्दगी होती, शख्सी ज़िन्दगी होती अलग–अलग ज़िन्दगी होती जैसे जानवरों में एक दुसरे से रब्त नहीं होता तुम्हारी ज़िन्दगी अलग हमारी ज़िन्दगी अलग न कोई तमददुन है न कोई मोआशरत है न कोई आपस में रब्त है। अगर ऐसी इंसानी ज़िन्दगी होती तो मुहब्बत के इलाके टूट जाते। लेकिन चूँकि मसलहते इलाही ये थी कि इंसानों में अफ़राद एक दूसरे से मुजतमा रहें। ताल्लुकात एक दूसरे से क़वी से कवी तर होते रहें। खानदान बनते रहें। ख़ानदान से कौमें बनती रहें, कौमों से मुल्क बनते रहें और इंसानियत का रिशता मज़बूत से मज़बूत तर होता रहे। तो चुँकि रिश्तऐ मुहब्बत को कायम, रखना था लेहाज़ा परवरिश के बाद भी मोहब्बतें कायम उलफतें बरकरार ताकि नसबी रिशते एक दूसरे से मुंसलिक करते चले जायें। एक दूसरे से करीब करते चले जायें।

मां कौन है? अल्लाह की रहमानियत और रहीमियत का मज़हर। बाप कौन है? अल्लाह की रहमानियत और रहीमियत का वसीला। उसको पालना था वो चाहता था कि बच्चे की परवरिश हो। लेहज़ा माँ बाप के दिलों मे मुहब्बतों के तूफ़ान उमड़ रहे हैं। जज़बाते मुहब्बत किसी हद पर रुकते ही नहीं, मालिक तो था अरहमुर राहेमीन तो, था बच्चे को परवरिश करने के लिये दिल में मुहब्बत पैदा करने वाला तो मैं मां कि कद्र क्यों करूँ, फिर माँ बाप की इज़्ज़त क्यों करूँ? ये तो फ़ितरी जज़बात की बिना पर मजबूर थे। तूने उनके दिल में उलफ़त पैदा कि थी जब कर रहे थे मेरी ख़िदमत बस अब तेरे सामने सर झुकाऊँगा, मां बाप की इज़्ज़त क्यों करूँ। ज़रा तवज्जो फरमायें जब अल्लाह ने माँ बाप के दिल में बमसलहेत मुहब्बत पैदा कर दी थी तो अस्ल रहमान व रहीम तो अल्लाह है। माँ बाप तो उसकी रहमानियत व रहमीमियत की बिना पर मेरी परवरिश कर रहे थे, फिर मैं मां बाप की एताअत क्यों करूँ? ज़रा तवज्जो फरमायें, मुसलमान गौर करें कि माँ बाप सिर्फ वसीला थे अल्लाह की रहमतों का लेकिन कुरआने करीम हुक्म देता है कि तनहा मेरी इबादत न करो, मां बाप की एताअत भी करो, उनसे एहसान का बर्ताव भी करो, मेरा शुक्र तब–तक अदा न होगा जब तक उनका शुक्रिया न अदा कर लो मेरी इबादत कामयाब नहीं है, जब मां बाप की फरमाबरदारी न कर लो। ऐ मेरे मालिक मैं तेरे हुक्म से सर को झुकाऊँ मगर बता तो कि मां बाप की क्यों कर फरमाबरदारी करूँ, क्यों उनके सामने सर झुकाऊँ तो जवाब मिलेगा कि अस्ल मैं हूँ लेकिन वसीला ये हैं। मैं। नहीं चाहता कि वसीला छोड़ दो और मुझ तक आ जाओ। (सलवात)

जो किसी एक सिफ़त में वसीला बन जाये उसको अल्लाह छोड़ना गवारा नहीं करता तो जो अल्लाह के हर फैज़ के लिये वसीला बने हों उनको छोड़ना कैसे गवारा करेगा।(सलवात) सिर्फ परवरिश के लिये वसीला बन गये तो इतना बलन्द मरतबा ला ताकुलल्लहोमा उफ्फिन खुदाहमारी कौम के बच्चों को तौफीक अता फरमाये कि वो अपने मां बाप को खुश रखें। आपकी ख़िदमत में अर्ज़ करता हूँ कि मां बाप की खिदमत खाली आखेरत के लिये जज़ा का सबब नहीं है, कि वहां बदला मिल जायेगा और अल्लाह वहां सवाब व अज्र देगा। मेरा तजुर्बा ये है कि जो मां बाप के नाफ़रमान होते हैं वो दुनिया में भी चैन से नहीं रहते। दुनिया में हमेशा परेशानीयां उनका ईस्तेकबाल करती हैं और जो माँ बाप की

एताअत करते हैं, जो माँ बाप की ख़िदमत करते हैं जो माँ बाप को खुश रखते हैं उनकी खुशी से आखरत भी बनती है और दुनिया भी बन जाती है। दुनिया में भी खुश रहते हैं, दुनिया में भी अल्लाह उनके लिये ज़रिऐ और वसीले पैदा करता है। तो यह इतनी अज़मत है माँ बाप की ला तकुल्लाहुमा उफ्फिन देखो मां बाप के लिये उफ भी न कहना वला तनहरहुमा जब उफ़ नहीं कह सकते तो झिड़कना क्या? व कुल्लाहुमा कौलन करीम। और जब कहना तो उनकी इज़्ज़त व एहतेराम का लेहाज़ रख कर बात कहना। कज़ा रब्बोका इल्ला ताबोदू व इल्ला ईयाहो इलाही फैसला है कि मेरी इबादत करो, मेरे अलावा किसी कि नहीं वबिल वालेदैने एहसानन। बस ये ही नहीं कि अपने मां बाप के साथ हुस्ने सलूक करते रहना अनिशकुरली ज़रा अज़मत देखें आपकी अपनी इबादत के साथ तज़केरा अनिशकुरली वलेवालेदय्यका तेरा फरीज़ा है कि मेरा शुक्रिया अदा करो और मां बाप का शुक्रिया अदा करो। अपने शुक्रिये के साथ मां बाप के शुक्रिऐ का तज़केरा।

ये कोई ऐसी बात नहीं है जो मैं कह रहा हूँ। क्या ये अपाको मालूम नहीं है कि अगर कोई आक़े वालदैन माँ बाप का ऐसा नाफ़रमान कि उनके रहमो करम के बावजूद मां बाप ने आखिर में आज़िज़ हो कर आक़े कर दिया। ज़ाहिर है कि कोई ऐसी तो अज़ीयतें पहोंचायीं कि आक करने पर तैय्यार वरना उनका ऐसा मेहेरबान क्यों चाहेता। और मैं माँ बाप से भी कहता हूँ कि आपकी औलाद लाख आपको तकलीफ़ पहोंचाये लेकिन आपकी मुहब्बत का तकाज़ा ये है कि कम से कम उनकी आखेरत संवरी रहने दीजिए। आखरी मंज़िल है आक़ कर देना। ज़रा सी बात में खफा होकर आक़ न किजिये। इसलिये कि आक़ करने का असर दुनिया में तो कुछ नहीं पड़ेगा। यानी इस एतेबार से तो हो सकता है कि परेशान हों, लेकिन मसले के एतेबार से ये कि मीरास उनको न मिले ये नहीं कि आपके बाद आपका माल किसी और को मिल जाये। कम से कम दुनयावी एतेबार से वारिस ये ही होंगें। इसलिये आपने आक भी कर दिया लेकिन विरासत का रब्त अल्लाह ने कायम किया। आप जो रिश्ता जोड़ें वो तोड़ सकते हैं। आज किसी खानदान में शादी की तलाक देकर निकाल दीजिये, वो गयी, अब आप से उससे कोई रब्त नहीं। हुकूमत रब्त कायम रखे, शरीयत में नहीं रहता इद्दह खत्म होने के बाद वो आ जाये वापस। लेकिन अबनियत का रिशता अल्लाह ने कायम किया है, आपके काटे से वो कटेगा नहीं। वो रहेगा आप ही का बेटा, मिरास पायेगा।ये और बात है कि वो आखेरत में बख्शा न जाये।

और ये मुसल्लम रिवायात हैं कि अगर कोई आके वालदैन है तो अगर माँ बाप मोआफ न करें तो वो जन्नत की बू भी नहीं सूंघेगा, जाना कैसा? जन्नत की बू भी नहीं सूंघेगा अगर आके वालेदैन है। मां बाप ने नाफरमानीयों की बिना पर आक़ कर दिया है तो अल्लाह नहीं बखशेगा। वो रहमान भी है रहीम भी है मगर वो आदिल भी है और अपना हक मुआफ कर सकता है लेकिन दूसरे को मोआफ कर दे तो उस पर जुल्म हो जाये। लेहाज़ा उसकी अदालत का तकाज़ा है कि वो खुद नहीं मुआफ करेगा हां ऐसा ही कोई नेक आमाल है, माँ बाप को राज़ी होकर मोआफ कर देंगें तब हकदारे जन्नत बनेगा। लेकिन अगर मां बाप मोआफ नहीं करते हैं तो ये नाफरमान औलाद नमाज़ी हो मगर बख्शी न जायेगी।

ज़रा तवज्जो फरमायें जो अर्ज़ कर रहा हूँ, पूछ से न पूछिये किसी फिर्के के आलिम से मूछ लिजिए। बहोत नमाज़ें पढ़ी लेकिन नाफरमान और आक़शुदा था तो क्या नमाज़ें बख्शवायेंगी? रोज़े रखे मगर आक़े वालदैन था तो क्या रोज़े बख्शवायेंगें? हज कर आया मगर आक़े वालदैन था तो क्या हज बख्शवायेगा? ज़कात दी तो क्या

ज़कात बख्शवायेगी? खुम्स अदा किया मगर आके वालदैन था तो क्या खुम्स बख्शवायेगा? पूरी इबादतें गिनते जाइये तमाम ओलमा जवाब देगें नहीं बख्शा जायेगा जब तक वालदैन न मुआफ करदें। ऐ मुसलमानों! ज़रा गौर करो, जो खाली एक सिफत का मज़हर बन जाये तो उसका ये आलम है। ये मसलहतें वहां जाकर मालूम होती हैं अगर हर साल हज वाजिब कर दिया जाता तो एक हज भी कोई न करता। तो बड़ी ज़हमतें बरदाशत करना पड़ती हैं। हाजी साहब हैं, मगर हाजी साहब को हज फायदा न देगा, अगर मां बाप के नाफरमान हैं तो ज़रा गौर करो मुसलमानों! कि जिस ने एक सिफ़त में अल्लाह की नियाबत कर ली उसका मरतबा तो इतना बलन्द कि जब तक वो न बख्शे सब अमल बेकार हो जायें। और वो जो खलीफ तुलल्लाह है। हर हैसियत से जो अल्लाह के नायब हैं, हर चीज़ में जो सिफाते इलाही का कामिल मज़हर हैं अगर उनसे रब्त नहीं है तो मेरी इबादतें क्या काम देंगीं?

मगर इसी मिसाल पर ज़रा अर्ज़ करूँ, दूसरा रूख भी देख लीजिए वही मिसाल मां बाप की बड़ी खिदमत कर रहा हूँ, सुबह से शाम तक पैर भी दबा रहा हूँ, सर भी दबा रहा हूँ, खाना भी सामने लगा रहा हूँ, हाथ भी धुला रहा हूँ। गरज़ की जो खिदमतें भी हो सकती हैं वो सब कर रहा हूँ मगर नमाज़ गायब। रमज़ान में बाप के सामने खाना तो लगा दिया कि वो बूढ़ा है उस पर तो रोज़ा वाजिब ही नहीं मगर खुद भी साथ–साथ बैठ कर नोश फरमा रहा हूँ तो क्या खाली ऐताअते वालदैन काम देगी? नहीं। मां बाप की इताअत भी हो और मेरी भी इबादत भी हो।

ऐताअते वालदैन फर्ज़ की है क्योंकि वो मेरी एक सिफ़त का मज़हर हैं। अस्ल तो मैं हूँ लेहाज़ा मेरी नाफरमानी करके ऐताएते वालदैन फायदा न देगी, अस्ल तो मैं हूँ। यहाँ तक कि वही वालदैन जिनका मरतबा इतना बलन्द और अब उसी मुहब्बत की बिना पर जो मैंने पैदा की है, वो कह रहे हैं बेटा अबकी रोज़ा ना रखो, बड़ा सख्त ज़माना है, बहोत तेज़ गरमी है। दिन भर भूखे प्यासे रहोगे मुझ से बर्दाशत नहीं होगी और आप जानते हैं कि रोज़ा रखने से बीमार नहीं पड़ेंगें बाप कह रहा है रमज़ान का रोज़ा न रखो, अल्लाह कह रहा है रखो। बाप ने सुबह को ठण्छक के वक्त जब मैं उठने लगा तो एक मरतबा बाप ने कहा बेटा रात में सनीमा से बहोत देर से आये थे अब सोते रहो। अरे नमाज़। तो क्या बाद में कज़ा भी कर सकते हो, टाल जाओ एक वक्त नमाज़। तो क्या अब भी ऐताअत वाजिब? अरे जिसकी ऐताअत का मरतबा इतना बलन्द कि लातकुल्लहुम ओफिन उसी की इताअत जब मेरे हुक्म से टकरा जाये तो जिसकी ऐताअत वाजिब थी उसकी नाफ़रमानी वाजिब। अब उसका कहना न मानो मेरा कहना मानो इसलिये कि मैंने एताअत वाजिब की है इसलिये कि मैंने दिल में मुहब्बत पैदा की है। तो अब उनकी नाफरमानी वाजिब हो जायेगी जो अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ कोई हुक्म दे लेकिन अगर कुछ ऐसे हैं कि जो मरज़िये इलाही के ख़िलाफ़ उनकी ज़बान हरकत ही न करे जिनकी ज़बान से सिवाऐ अल्लाह के मंशे और मर्ज़ी की तरजुमानी के कोई लफ्ज़ निकले ही नहीं तो अब ज़ाहिर है कि उनकी नाफ़रमानी तो मुमकिन ही नहीं। वो तो वही कहेंगें जो अल्लाह चाहता है। तो अब जब उनकी ऐताअत करोगे तो वहां अंदाज़ा ये होगा, हुक्म उनका मानोगे ऐताअत दो की होगी उनकी भी इताअत होती अल्लाह की भी इताअत होती जायेगी। उनकी भी फरमाबरदारी होती जायेगी, अल्लाह की भी फरमाबरदारी जायेगी। देखो अगर उनकी खुशी रखना है तो ये तो उसी वक्त खुश होंगें कि जब अल्लाह को खुश रखो।

मैं सच अर्ज़ करता हूँ दोस्दाराने अहलेबैत (अ0) ऐ जांनिसाराने (अ0) मोहम्मद (स0) व आले मोहम्मद (अ0) के नाम पर जान फिदा

करने वालों! अगर तुम चाहते हो कि तुम्हरारे महबूब जिनसे तुमको दावाऐ मोहब्बत है, तुम से खुश रहें तो उसका रास्ता ये नहीं है कि तुम बस मजलिस में आकर उनका ज़िक्र सुनकर सलवात भेज दो बस। याद रखियेगा बस मजलिस में आकर उनका ज़िक्र सुनकर सलवात भेज दो। उनकी माहब्बत का तकाज़ा ये है कि अगर उनके ज़िक्र से खुश हो तो उनके एहकाम की ऐताअत करो। क्या आपने ये हदीस नहीं सुनी, उसको मैं ब्यान भी कर चुका हूँ। मगर सिलसिलए ब्यान में अपनी ही कोई बात दोहरा दूँ तो कोई एतेराज़ न किजिये। इसलिये कि कुरान मजीद जब दोहरा सकता है, एक ही ज़िक्र को मौके व महल के लेहाज़ से, अगर मैं दोहरा दूं तो ताज्जुब न किजिये, कोई ऐतेराज़ की गुंजाइश नहीं है।

क्या आपको वो हदीस याद नहीं जिसमें रिसालत मआब (अ0) फरमा रहे हैं मसअलो अहले बैती कसफीनते नूहिन मेरे अहलेबैत (अ0) की मिसाल सफीनऐ नूह की सी है मन रकबहा नजी जो भी इस सफीने पर सवार हुआ उसने नजात पायी व मन तकल्लफा अनहा ग़रक़ा व रहबा और जो भी इस सफीने से किनारा कश हुआ वो गर्क हुआ और हलाक हुआ।

अरे आप क्या इंकार करेंगें जब दुशमन भी इंकार न कर सके। सफीनए नूह वाली हदीस वो है जिस को गैरों ने भी माना। मामूली अफराद नहीं, दूसरीं के इमाम नक़्ल कर रहे हैं। इमाम फखरूद्दीन राज़ी आयए मोवददत के ज़ैल में तारीफ व तौसीफ के दरिया बहाते हुवे कहते हैं कि कौन है जो उनकी मुहब्बत से इंकार करे जिनके लिये रसूल (स0) ने कह दिया कि मेरे अहलेबैत (अ0) की मिसाल सफीनए नूह की सी है जो इस सफीने पर सवार हुआ उसने नजात पायी, जिसने किनारा कशी की वो गर्क व हलाक हुआ। और हदीस लिखने के बाद कहते हैं दरहकीकत ये शिआ व सिआ नहीं हैं। जो अहलेबैत (अ0) के सफ़ीने पर सवार हैं मुझे उससे बहस नहीं है कि कौन सवार है। मुझे तो आम दावत है जो भी आये सवार हो जाये। सफीने में गुंजाइश इतनी है कि पूरी दुनिया समा सकती है। कहते हैं कि हम ही इस सफ़ीने पर सवार हैं होंगें आपही लेकिन उसके बाद कहते हैं कि सफीने की शान ये होती है कि जब सफीने पर बैठा जाता है तो रास्ता तय करने के लिये सितारों पर निगाह होती है वबिन्नजमे तहतदून सितारों से नजात पाते हैं। वहाँ न कोई निशानियां होती हैं, रास्ते में और न कोई अलामत होती है, एक तरह का पानी मौजें मारता हुआ, किधर जाऊँ, किस तरफ जाऊँ, सितारों के ज़रिऐ फासला तय किया जाता है। आज भी कुतुब नुमा होता है जिससे सिम्त मोअय्यन की जाती है, तो हम वो हैं जो सफीनए अहलेबैत (अ0) पर सवार हैं और रसूल (स0) ने असहाब के लिये कहा था कि असहाबी कन्नुजूमे तो उन सितारों पर हमारी नज़र है और हम इस सफीने के साथ–साथ नजात की राह पर जा रहे हैं।

मैंने अर्ज़ किया कि मुझे किसी से दुश्मनी थोड़ी है। आइये आपही सफीने पर सवार हो जाइये। मैं तो दावते आम देता हूँ। लेकिन ये ज़रा गौर तो किजिए कि आप ने अन्नजूम की हदीस तो पढ़ दी लेकिन ये भी देखा कि रसूल (स0) ने कहा क्या है? अगर फ़रमाया होता कि मेरे अहलेबैत (अ0) की मिसाल सफीने की सी है, मेरे अहलेबैत (अ0) की मिसाल जहाज़ की सी है तो आप कह लेते कि सितारों के ज़रीऐ रास्ता मोअय्यन किया जाता है मगर फरमाते हैं कसफीनाते नूहिन आम सफीना नहीं, सफीन–ए–नूह की सी है तो ज़रा बताइये तो सफीनऐ नूह सितारों के ज़रीऐ चल रहा था। अरे सफीनऐ नूह तो वहीए इलाही के इशारों पर चल रहा था इसके लिये तो इरशाद है कि मेरे नाम पर ठहरता भी है, मेरे नाम पर चलता भी है, बेअय्योनोना व वहीना मेरी निगाहों मेरी वही के इशारों पर

बना और मेरी वही के इशारे पर चला। तो सफीनए नूह रास्ते तय कर रहा है तो सितारों से नहीं वहीए इलाही से, इशारए इलाही पर।

और ये तो सोचिये कि वहाँ कब थे सितारे? ज़मीन से पानी उबल रहा था, आसमान से पानी बरस रहा था, सफीने में सितारे दिखाईकब दे रहे थे कि उनसे रास्ता तय किया जाये? तो जिस तरह से सफीन–ए–नूह बगैर सितारे, वहीए इलाहीके इशारों पर चला उसी तरह से सफीनऐ अहलेबैत (अ0) इलहाम के इशारों पर रास्ता तय करता रहेगा। और सवार कौन है? देखिये अब रास्ते में और आप अपने रास्ते चल रहे हैं, देखिये दरिया में कश्ती चली जा रही हैं और आपने कशती देख कर एक मरतबा तारीफें शुरू कर दीं, क्या कहना, कैसी मज़बूत कशती बनी हुई है। अरे देखिये तो कशती सजी हुई है, कितनी आराइश है उसमें। मुझे तो भी ये कशती पसन्द आ गयी। कशती दरिया में अपनी राह चल रही है। किनारे–किनारे आप राह चलते हुवे तारीफ़ कर रहे हैं। क्या कोई कहेगा कि कशती में सवार? सवार तो वो है जिसका हरकत व सकून कशती कि हदों के अन्दर महदूद हो जाये तो हां वो नजात पायेगा जो सफीनऐ अहलेबैत (अ0) में सवार हो, जो अपने हरकत व सकून को हदूद का पाबन्द बना ले जो अहलेबैत (अ0) ने मोअय्यन किये हैं। (सलवात) जिसके लिये निदा आयेगी मन रकेबहा नजा जो उसमें सवार हुआ उसने नजात पायी और जो किनारा कश हुआ वो गर्क व हलाक हुआ।

किनाराकश होने वालों में कौन? सफीनए नूह पर जो सवार हुआ नजात पायी, जो अलग हुआ हलाक हुआ। अब अलग होने वालो में कौन? चाहे कितना करीबी रिश्ता हो, चाहे नस्बी रिशता हो चाहे हसबी, चाहे ज़ौजा हो चाहे बेटा जो अलग हुआ वे हलाक हुआ। अब ये न देखना कि रसूल (स0) से रिश्ता क्या है? ये देखना सफीने पर सवार है या नहीं। (सलवात) रिशते नाते न जोड़ो, ये देखो सफीनऐ अहलेबैत (अ0) पर सवार है या कि नहीं मन रकेबहा जो सफीने पर सवार उसने नजात पायी व मन तख़ल्लफ़ा अनहा जिसने, कोई भी हो, जिसने भी किनारा कशी कि वो गर्क भी हुआ और हलाक भी हुआ। जो सवार हो गया, जब तक सवार न था, देखो क्या है? उस वक्त देखो जब सवार हो गया, इध ार सवार हुआ और उधर नजात, बस नजात पाली।

जब तक अलग है सफीने से, अलग है और जिस दिन आ गया और अब चाहे वो हुर हो जिसके लिये मैंने कल अर्ज़ किया था कि शबे आशूर से पहले क्या था ख़ुद कह रहा था कि जहन्नम के शोले नज़र आ रहे हैं और उनकी बरदाशत की ताकत नहीं और अगर सफीने में सवार हो गया तो क्या हुआ? अब हुसैन (अ0) सर ज़ानू पर रखे हैं। इमाम हुसैन (अ0) ने हर एक–एक का सर ज़ानू पर नहीं रखा। पचास आदमी तो हमलऐ अव्वली में शहीद हुऐ थे। एकदम से तीरों का हमला, चार हज़ार तीरअंदाज़ जिन्होंने करीब आकर लश्करे हुसैनी के एक दम से चार हज़ार तीर चलाये। जिसका नतीजा ये हुआ था कि जितने घोड़े थे सब पै हो गये थे जितने सवार थे सब पियादा हो गये और हमलाऐ अव्वली में पूरी फौज ने हमला किया तो पचास जो निसार शहीद हो गये।

अब आप बतायें कि हुसैन (अ0) सब के सरहाने आखिरे वक्त कैसे पहुंच सकते थे। वो ऐजाज़ की ताकत अलग लेकिन ज़ाहिरी हालात के लेहाज़ से मखसूस दोस्त। उन्हीं मख़सूस दोस्तों में हुसैन जिनके सरहाने गये और सर ज़ानू पर उठा कर रखा उन्हीं में जनाबे हुर हैं। सर ज़ानू पर रखे हुऐ नौहा पढ़ रहे हैं लानेएमल हुरों हुर्रेबनीरिआहि क्या कहना, ऐ हुर क्या कहना ऐ खानदाने बनी रेआह के फरज़न्द! कैसा शुजाअ और बहादर था। नैज़े पड़ते रहे सब्र पर आंच न आयी। कितना अच्छा तेरी मां ने नाम रखा था

कि दुनिया में भी गुलामी से आज़ाद रहा और आखरेत में जहन्नम से आज़ाद है। और सिर्फ ये ही नहीं कि मेहमान है मेहमान नवाज़ी, कासिम के सर पर तलवार पड़ी मगर मैंने नहीं देखा हुसैन (अ0) ने ज़ख्मे सर बांधा हो। अब्बास (अ0) के सर पर गुर्ज़ पड़ा मगर मैंने नहीं देखा कि ज़ख्मे सर बांधा हो। जब हुर के लाशे पर आये, सर को दो पारा देखा, सर उठा का ज़ानू पर रखा, जेब से रूमाले फातेमा (स0अ0) निकाला। फातेमा (स0अ0) के हाथ का काटा हुआ बुना हुआ रूमाल। हुसैन (अ0) ने मेहमान का ज़ख्मे सर बांधा। मैं कहता हूँ मौला हुर का ज़ख्मे सर बांध दिया आपने लेकिन मेरा दिल कहता है कि फातेमा (स0अ0) तड़प गयी होंगी, ऐ मेरे बच्चे हुर के एक ज़ख्म को तूने बांध दिया। अरे जब तू ज़मीने करबला पर आया ज़ख्मों से चूर–चूर अरे मैं किस–किस ज़ख्म को बांधू। अज्रोरोकुमअलल्लाह।

ये न देखो कि कौन कल तक क्या था ये देखो सफीनऐ अहलेबैत (अ0) में कब सवार हुआ। जनाबे ज़ुहैरे कैन हुसैन (अ0) के जांनिसार हैं। जो खास तज़केरा मिलता है मैमनाए हुसैनी के सरदार ।

जब लशकर आप ने तकसीम किया है, छोटा सा लशकर, मगर क्या अंदाज़ है। हुसैन (अ0) का। बहत्तर का लशकर मगर मैमना भी मैसरा भी कल्ब भी, पूरे लशकर की तरतीब। पूरे लशकर का अल्म अब्बास (अ0) को दिया, कल्बे लशकर की सरदारी अली अकबर (अ0) के सिपुर्द की, मैसरे का अलमदार हबीब इब्ने मज़ाहिर (अ0) को बनाया, मैमने की ज़िम्मेदारी ज़ुहैरे कैन के सिपुर्द की। ये ज़ुहैरे कैन कौन हैं? ये ज़ुहैर कैन वो हैं कि जिनके लिये तमाम तारीखों की तसरीह काना उस्मानिया आज से पहले इस गरोह में शामिल थे जो अहलेबैत (अ0) का मुख़ालिफ़ समझा जाता था। चले थे मक्के से ये भी मगर ऐहतेयात का आलम ये था कि हुसैन अ0 कयाम करते थे तो कूच कर जाते थे और जब हुसैन (अ0) कूच करते किसी मंज़िल पर ये ठहरते थे, इत्तेफ़ाक़ से एक मंज़िल पर ये ठहरे हुऐ थे, मंज़िल कम थी कि हुसैन (अ0) का काफेला भी आकर ठहर गया और इमाम की नज़र पड़ी ज़ुहैरे कैन के खैमे पर, और वो वक्त है कि जब ज़ौजा के साथ खाना खा रहे, हैं कि एक मरतबा किसी ने दरवाज़े पर आवाज़ दी। कहा कौन? कहा मैं हुसैन (अ0) का पैगाम्बर। ये अज़मत है ज़ुहैरे कैन की कि अब जो पहुंचे तो देखा कि अली अकबर (अ0) आये हैं। ऐ ज़ुहैर मेरे बाबा ने बुलाया है। यहां तक कि ये पहुंचे करबला में।

वाकेआते करबला में औरतों का भी बड़ा हक है, औरतों की बड़ी कुर्बानियां हैं।यहां पर ज़ुहैर की ज़ौजा का वो रब्त व ताल्लुक नहीं है जो हबीब की ज़ौजा का, हबीब की ज़ौजा ने जो कहा था यकीनन उनके जज़बात का तर्जुमान लेकिन हबीब के अलफाज़ बमसलहेत थे। लेकिन ज़ुहैर मैं अभी अर्ज़ कर कर चुका कि अलाहेदा गरोह में, ज़ौजा ने पूछा क्या, ये चेहरे का रगं क्यों उड़ा है? कहा वो ही हुआ जिसका डर था। अरे इसीलिये तो मैं ठहरता नहीं था। क्या हुआ? कहा हुसैन (अ0) का पैगाम्बर आया है, हुसैन (अ0) ने शबीहे पैग़म्बर को भेज कर बुलाया है। बस ये सुनना था, ये जज़्बा सच्चा, सादिक़ एक मरतबा ज़ौजा ने कहा वाह ज़ुहैर, अरे रसूल (स0) का नवासा बुला रहा है और तुम्हें जाने में उज़्र है ।

अरे जाकर सुनकर आओ कि क्या कहते हैं ज़ुहैर मजबूर हुए ज़ौजा के कहने से आये और अब मैं नहीं जानता कि हुसैन (अ0) ने क्या कहा।

तारीख में तो बस ये है कि हाथ पकड़ कर बगल में दबाया, खैमे के पीछे ले गये, कुछ बातें हुई। अब वो क्या बातें हुयीं? मालूम होता है क्या कह दिया, मैं नहीं जानता मगर नाखुदाऐ

कशताऐ अहलेबैत (अ0) हाथ पकड़ कर कशती में सवार कर रहा है।

अब जो पलटे तो बदले हुऐ, सबसे पहले गुलामों से कहा कि तुम सब आज़ाद राहे खुदा में और फिर कहा काफले वालों से कि जाओ तुम्हारा रास्ता अलग हमारा रास्ता अलग। ज़ौजा से कहा कि मैंने तुझे तलाक दी, जितना सामान है तुझे बख्श दिया। ये तमाम सामान ले जा। बस जब तक गुलामों की आज़ादी सुना चुप थी, जब दोस्तों से कहा कि रास्ता अलग तय करो खामोश थी।

अपने लिये सुना तो घबरा कर कहा, क्या खता हो गयी है, क्या कोई कसूर हो गया है कहा व कसूर नहीं। अरे ये रिश्ते जीने के, ये रिशते हैं। ज़िन्दगी के। अब मैं। जा रहा हूँ हुसैन (अ0) के साथ जाने देने। अब मैं अपने आका के साथ निसार होने के लिये जा रहे हूँ। अब सआदत की ऊरूस को गले लगा रहा हूँ ताकि दुनिया से तालुकात तोड़ देना चाहता हूँ। कोई रूकावट न रह जाये, कोई कशिश न रह जाये। सब से अलग हो जाना चाहता हूँ।

आये हुसैन (अ0) के साथ और वफादारी का आलम ये कि अब यही जुहैर कह रहे हैं आका, क्या फरमाते है, आपका साथ छोड़ दें। ऐ आका एक हज़ार अशर्फी की तलवार है एक हज़ार अशरफ़ी का घोड़ा है जब तक तलवार पकड़ सकूंगा तलवार से जंग करूंगा और जब तलवार न संभाल सकूंगा, हाथों में तलवार संभालने का दम न रहेगा पत्थर उठा कर मारूंगा मगर आप का दामन न छोडूंगा मैं कहता हूँ ज़ुहैर, तुमने मसअलन कहा था कि पत्थर उठा लूंगा। ज़रा करबला में उस वक्त जब हुसैन (अ0) अकेले खड़े हैं कोई तलवार मार रहा है, कोई नैज़े मार रहा है और कोई शकी झोलियों में पत्थर भरे अजरोकुमल्लाह।

बस आखरी कलाम में सुनें, अक ज़ुहैर आये, हुसैन (अ0) पर जान निसार की। ज़ौजा अपने काफ़ले वालों के साथ पीछे–पीछे रवाना जो आता है कूफे की तरफ से हालात पूछती जाती है। खबर मिली कूफे के करीब एक ज़मीन है जहां नवासऐं रसूल (अ0) दुशमनों में घिर गया है। फिर पता चला ऐ मोमना, तीन दिन से पानी बन्द है। प्यासे बच्चों के हाथ में खाली कूज़े हैं। फिर खबर मिली नवासए रसूल (स0) को जुल्मो जफा से शहीद कर दिया गया।

बस सुनें आप। एक मरतबा अपने गुलाम को बुलाया। कहा मैंने तेरे आक़ा को नुसरते इमाम (अ0) के लिये आमादा करके भेजा था। खबर मिली कि हुसैन (अ0) शहीद हुऐ तेरे आक़ा ने जाननिसार की। अरे किस ने तेरे आक़ा को दफ़न किया होगा? किस ने कफन दिया होगा। ले जा, ये कफ़न ले जा जाकर जुहैर को कफ़न देकर दफ़न कर देना।

गुलाम कफ़न लेकर गया और पलट कर जो आया तो कफ़न मौजूद था। पूछा क्या तेरे आका की मय्यत दफन हो गयी? क्या कफन मिल गया था? कहा नहीं बीबी लाशा बेकफ़न पड़ा था। कहा फिर भी कफ़न न दिया, इसीलिये भेजा था कफ़न देके, फिर भी कफ़न दिये बगैर चला आया। कहा ऐ बीबी, एक ही तो कफ़न दिया था। अरे वहां तो बहत्तर लाशे बेगुस्लो कफन पड़े थे, ऐ बीबी क्या मैं ज़ुहैर को कफ़न दे देता और हुसैन (अ0) का लाशा बेकफ़न पड़ा रहता।

अली अ0 काबे में है

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी

मेहर भी हैरत में है वह रौशनी काबे में है
अर्श पर है गुफ़तगु ख़ात्मुन्नबी स0 काबे में है
आसमानी मसअला है फ़ातेमा स0 मसरूर हैं
एक अली अ0 के हुक्म पर ही एक अली काबे में है